VOL. 42, OCTOBER - DECEMBER 2012

IN THE NAME OF GOD

FOR FREE CIRCULATION WITHOUT ANY COMMERCIAL OBJECTIVE

अन्तरध्वनि
The Inner Voice
अन्दर की आवाज़

For New Richness in Life

- शरीर की औकात और आत्मा की हैसियत कब पता चलती है?
- Spiritual richness के बिना Financial richness किस काम की है?
- जाएँगे तो दूसरों के सहारे, क्या जिएँ भी दूसरों के ही सहारे?
- क्या हमारे सम्बन्ध अपने ही साथ सच्चे और मधुर हैं?

Happy New Divine Life

MISSION CONSCIOUSNESS
GOD bless you MORE
MISSION HAPPINESS

TURN to God
before you
RETURN to God

www.facebook.com/antar.dhwani.1

e-mail : contact@missionhappiness.in
visit us at www.missionhappiness.in

क्या हम अन्दर से भी अमीर हैं?

Are we rich spiritually?

आत्म चिन्तन (Introspection) करने वाले भाग्यवान होते हैं। उनको अपनी **body की औकात** और **soul की हैसियत** हर पल ध्यान में रहती है।

हैसियत - Highest Value

औकात - Lowest Value

Please अपनी **Spiritual Richness check** करके देखिए :–

1. क्या हम Morning में उठते ही, God से **किसी से लेने वाले नहीं, सभी को देने वाले,** बनाने की prayer करते हैं?
2. क्या हम Home, या Office में, servants को servants नहीं **Helpers** मानकर, उनको respectfully and lovingly treat करते हैं?
3. क्या हम residence, office को **God gift** समझ कर प्रत्येक gadget वस्तु को **व्यवस्थित और clean** रखते हैं?
4. क्या हम दूसरों के गलत काम करने पर, **भड़कने** के बजाए, **ान्त रहकर, firmly and lovingly** उनको correct करते हैं?
5. क्या धन के बढ़ने से हमारे अन्दर **ई वर के प्रति श्रद्धा** और **गरीबों के प्रति विनम्रता** बढ़ रही है, या silently ego increase हो रहा है?

If the answer is Yes,
Then life में
Entertainment + Enlightenment
दोनो हो रहे हैं?
आप बधाई के पात्र हैं।

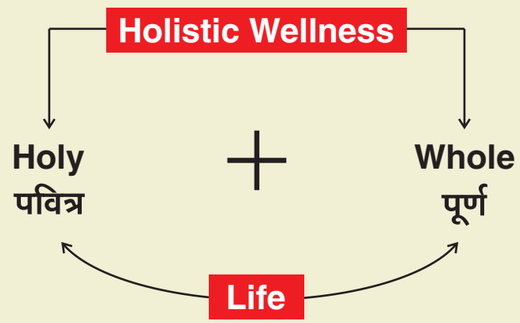

जनाज़े (शवयात्रा) से पहले ही
जन्नत (स्वर्ग) का आनन्द

अपने जिस्म को इतना संवारते हैं,
जिसे मिट्टी में मिल जाना है।
संवारना है तो रुह को संवारो,
रब के पास तो उसे ही जाना है।

Divine Bank Account

पढ़ कर हैरानी होगी। Yes, but यही bank account असली होता है जिन्दगी का। ज्यादा कमा लें, ज्यादा जमा करें, worldly bank में temporary खु ी महसूस करें, और फिर जल्दी ही सब छोड़ जाएँ।

This is the worldly view of a worldly bank

दूसरा Account होता है–पाप और पुण्य का। जो यहाँ भी साथ रहता है और म ान, कब्रिस्तान के आगे भी पीछा नहीं छोड़ता। इस Divine Bank का स्वरूप कैसा है?

CHAIRMAN - **ALL POWERFUL, GOD**

BRANCHES - अनेक लोकों में अनेक श्रेणी के स्वर्ग नरक

CAPITAL BASE & ASSETS - Infinite अनेक ग्रह, Many Suns, Many Planets

CURRENCY - **Truth & Love** राम नाम सत्य है – कहना पड़ता है, ावयात्रा के वक्त

BANK STAFF - **Righteousness, Honesty, Innocence, दया, नम्रता, सत्यता आदि**

BANK VISION - Egolessness - अहंकार से मुक्ति

BANK INTEREST - सेवा, स्मरण, सत्संग, ुभ कर्म।

DIVINE BANK LOAN - A wonderful body & sharp intellect - 60-70 वर्षों के लिए ारीर + बुद्धि

RECOVERY AGENTS ON NON REPAYMENT OF LOAN - Disease, Accidents, Family Tension and ultimate death of body.

UNIQUE FEATURE - हर कण में branches **किन्तु नजर न आएँ।** पापों लोभ + अहंकार और पुण्यों सादगी + सेवा के according किस्मत की F. D. issue करते रहते हैं।

क्या हम अपना

Divine Bank Account, 3 times a day update कर रहे हैं ?

because

संसार से हाथ में नहीं,

मन में बहुत कुछ लेकर जाते हैं।

Congratulations !

यदि मन पवित्र है तब आत्मा 100% शान्त ही रहेगी

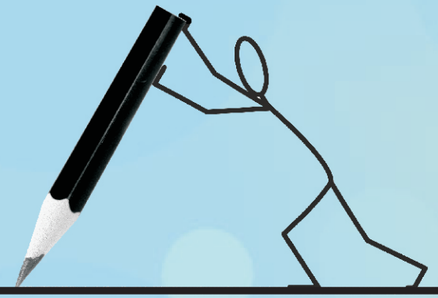

Inner Voice
क्यों और किसके लिए?

Justice Kalimullah Khan

30th October, 2012

Allahabad High Court के **Honourable Justice Kalimullah Khan Sahab** का एक संदे ा प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने **''जीवन के मर्म''** को बेहद खूबसूरती से बयान किया है। माननीय न्यायमूर्ति, जनाब कलीमुल्लाह खाँ साहब स्वयं न केवल एक बहुत ँचे स्तर के न्यायविद हैं, **बल्कि उनका दिल एक सागर से तुलना करने योग्य है,** जिसमें सभी के लिए, particularly जरूरतमंदों के लिए बेइन्तेहाँ प्यार भरा हुआ है। **हर समय खु ा रहते हुए, ोरों के माध्यम से संवाद में रौनक ले आना और बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पहली ही मुलाकात में अपना बना लेना। ई वर ने उनको इस अदभुत दौलत से नवाज़ा है।**

उनका पत्र, Innervoice में इसलिए reproduce किया जा रहा है, जिससे कि लाखों पाठकों, particularly, society की elite class को **purpose of living, जीवन के उद्दे य का reminder** मिल सके।

Society में आज जो ँचे स्थानों पर हैं, सफल हैं, धनवान हैं, विद्वान हैं, आम जनमानस से अधिक सक्षम हैं, उनके लिए यह अन्तरध्वनि है।

क्यों?

पता भी नहीं चलेगा, और अन्तिम यात्रा का वक्त आ जाएगा। ारीर तो जल या गल जाएगा। किन्तु रूह को जवाब देना पड़ेगा।

म ाान और कब्रिस्तान से आगे की यात्रा सरल और ाान्त हो इसके लिए "Divine Bank Balance" of पुण्य, सबाब, earn करने का अभ्यास तेज कर दें।

इतने महत्वपूर्ण पद पर एवं मसरूफ होते हुए भी यदि न्यायमूर्ति खाँ साहब, अपनी Divine feelings share कर रहे हैं, तब इस पवित्र महायज्ञ, of **"Soul awakening''** में आपकी feelings and co-operation का contribution, **अनेक सोई हुई आत्माओं को जगा सकता है।**

Mr. Suri,

Intellectuals do not do any different thing, what they do is, they do the things differently. In this materialistic era, the mob is running to earn more and more leaving behind them, masses, uncared for, with the result that the downtrodden million are suffering for their no fault although they are trying their level best throughout the life, leaving no stone unturned, by running from pillar to post. The cause of their miseries and sorrows are to be found out by those who are responsible for it. They are none else except us. The most peculiar feature of the concerned episode is that, those who are spending their lives in running after the materialistic pleasures are also not happy because happiness does not lie in gaining and storing wealth. The question arises as to where happiness and peace lie and how the lot of the lots of human being would be uplifted so that everyone may live with happiness and peace with full devotion to the Almighty i.e. the creature of the universe? Mission Happiness, Bareilly appears to be committed to the betterment of mankind by providing a platform for interaction amongst the positive thinkers, believers in simple living and devotees of God who are capable to find out the difference in between right and wrong by self inspection and public perception of things, human behavior and all attending circumstances around us to ensure that a thing of beauty is a joy forever, This has been experienced by me during my tenure as District & Sessions Judge, Bareilly.

बता दो रास्ता भटके हुए मुसाफिर को,
ये कारे खैर है, इसमें दुआ भी मिलती है।

I sincerely wish all the love, luck and success in their Mission Happiness with this couplet.

(Justice Kalimullah Khan)

Mr. K. B. Suri,
Founder, Mission Happiness,
C-79/2, Rajendra Nagar,
Bareilly

Doctors and Chemists के साथ Relations स्वार्थ वाले या यथार्थ वाले?

कोई भी organisation, medicines या कोई अन्य product, sale करता है, तो profit कमाना ही primary aim होता है। क्योंकि mostly लोग

इसी दुनिया को ही असली समझते हैं।

इसीलिए

जीवन की असलियत समझ नहीं पाते।

इसका result होता है स्वार्थ वाले सम्बन्ध और यहीं से पाप और बदनसीबी का बीज grow करने लगता है।

दूसरे होते हैं–यथार्थ वाले सम्बन्ध जब यह सत्य ध्यान में हर पल रहता है कि हमारे प्रत्येक action and intention का फल, पाप या पुण्य के रूप में हमारा पीछा करेगा, जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी तब यर्थाथ वाले सम्बन्ध स्वतः स्थापित होने लगते हैं।

Doctors and Chemists के साथ **सच्चे और सात्विक सम्बन्ध बनाना** जरूरी भी है और मजबूरी भी है।

''आत्मा को पवित्र रखना जरूरी है।

Patients के silent श्रापों से बचना मजबूरी है।

Products सभी powerful होते हैं।

किन्तु सभी products पवित्र नहीं होते।

क्योंकि

जैसे ही किसी भी product में से किसी के लिए patients के अलावा कुछ भी निकाल लिया तो उसकी बरकत पवित्रता चली जाती है।

Therefore patients को पवित्र **products** देना

एवं doctors, chemists की

'आत्मउन्नति एवं आत्मगौरव'

बढ़ाने में उनका सहयोगी बनना और

मतलब के नहीं मर्यादा के

relations बनाना है।

because BODY WILL PERISH BUT SOUL WILL SURVIVE

Body की Death को ध्यान में

रखते हुए व्यापार, व्यवसाय करने के फायदे

1. Body की death ध्यान में रहेगी, तो अपनी मूल पहचान 'आत्मा' का अहसास होने लगता है।
2. आत्मा का एहसास होने से ाान्ति बढ़ने लगती है। क्योंकि सत्य पता चल जाता है।
3. सत्य पता चलने से **बेईमानी, लालच** करने के chances तेजी से समाप्त होने लगते हैं।
4. व्यवसाय या व्यापार जितना अधिक ईमानदार होगा बरकत उतनी increase होती जाती है।
5. Business, Profession में बरकत होने से **difficulties** स्वतः ही कम होने लगती हैं, और आत्मवि वास बढ़ता जाता है।
6. आत्मवि वास बढ़ने से खु ाी पल–पल महसूस होने लगती है and the body remains in wellness.
7. Body की illness कम होने से creativity बढ़ जाती है और नित्य नए तरीके adopt होने लगते हैं।
8. Body की death ध्यान में रहने से झगड़े, **dispute, conflict कम होने लगते हैं,** जिससे य ा कीर्ति बढ़ती जाती है।
9. **ाान्त व सुखी मन, परिवार वालों को भी पसन्द आता है** तथा जीवन का भरपूर आनन्द परिवार के साथ लिया जाता है।
10. Body की death ध्यान में रहने से, मिलने वालों के प्रति आदर, स्नेह बढ़ता जाता है तथा **return में भी positive vibrations मिलती हैं multiply होकर।**

Income बढ़ने लगती है, unnecessary के expenses नहीं होते,
मोह, प्रेम में transform हो जाता है।

भय और अहंकार, आत्मसम्मान में बदल जाते हैं।

ईश्वर का चमत्कारिक प्रेम

कुछ समय पहले की बात है। एक समुद्री जहाज, तूफान में फंस कर डूब गया। इसमे सवार दो यात्रियों को छोड़कर सभी की मत्यु हो गई। दोनों जीवित यात्रियों ने अपने को समुद्री लहरों के सहारे एक सुदूर टापू पर पाया। दोनों बहुत हैरान भी थे और परे ाान भी। जिन्दा तो बच गए पर एक वीराने टापू में करें क्या? खैर, दोनों ने हिम्मत बटोरी और लकड़ी इत्यादि एकत्रित कर एक छोटी सी झोपड़ी बना ली।

चूंकि, टापू में मौसम बहुत ठंडा था, इसलिए दोनों ने राहत की सांस ली कि, चलो सिर छुपाने की जगह तो बनी। ठंड और जंगली जानवरों से रक्षा तो होगी। दूर–दूर तक जल ही जल था, मानव की जाति या आवागमन का संकेत तक नहीं था।

कुछ समय बीता होगा एक दिन दोनों जंगल में टहलने चले गए ताकि खाने का कुछ प्रबन्ध हो सके। किन्तु जैसे ही वापस आए तो देखा कि उनके द्वारा बनाई लकड़ी की झोपड़ी धूँ–धूँ करके जल रही थी।

दोनों सिर पकड़ कर बैठ गए और **जोर–जोर से रोते हुए ई वर को कोसने लगे।** एक तो जहाज डूब गया, दूसरे, इतनी मु किल से बनाई झोपड़ी जल गई। **कहाँ है ई वर? कौन कहता है दयावान है?**

लेकिन अगले ही दिन उनको एक छोटा जहाज अपनी ओर आता दिखा। दोनों खु ाी से झूम उठे और जैसे ही जहाज वाले उनके पास आए दोनों उनके पैरों में गिर पड़े। फिर बड़े कौतूहल से पूछा कि इतने वीराने महासागर में वह कैसे आ गए? समुद्री जहाज में सवारों ने उन्हें बताया कि दूर से उन्हें धुँआ उठने से पता चला कि वहां कोई है, और ाायद उसे मदद की जरूरत हो।

यह जानकर दोनों ही **जमीन पर गिरकर रोते हुए परमपिता परमे वर को धन्यवाद देने लगे कि किस अद्‌भुत तरीके से उनका जीवन बचा।**

झोपड़ी में आग न लगती और धुँआ न निकलता तो उसी टापू में देर सवेर, उनकी वीराने में ही मत्यु हो जाती।

दिव्य संदेश – ईश्वर अपने बच्चों को पूरा ध्यान रखता है। हम अपने कर्मों के अनुसार दुख में भी सुख और आत्मिक उन्नति के सुअवसर देख नहीं पाते। बेशक ईश्वर की पूरी कोशिश रहती है कि दुख हो या सुख हम उसका ध्यान करें। वह हमारा कल्याण अवश्य करता है।

Published by MISSION HAPPINESS. Ph. : 9837032053. e-mail : contact@missionhappiness.in website : www.missionhappiness.in Printed by : CANNON